“अशोक और मौर्य lkekT; dk iru – ,d iqLrd पर शोध leh{kk”

iqLrd ifjp;

iqLrd dk uke – अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन,

ys[kd – Mk- jkfeyk Fkkij

प्रकाशक – ग्रन्थ शिल्पी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड –fnYyh – **2005**

fgUnh vuqokn – Mh- vkj- pk/kjh, राजेशप्रभा यादव, vkfnR;ukjk;.k flag

ISBN- 81-86684-44-1

e[; fo"k; –

“अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन” ekU;oj Mk- jkfeyk Fkkij dh ,d vuqie d`fr gSA पुस्तक इतिहास के मौर्य काल का विवरण्ा प्रस्तुत कर व मौर्यो की कहानी का विशलेषण प्रस्तुत करती gSA iqLrd dh Hkk"kk विश्लेषणात्मक तथा fucU/kkRed ie[k gSA ys[kd us Hkkjrh; bfrgkl ds ikpuh काल को चुना है। जिसमे वह मौर्य वंश के बारे में इतिहास लेखन का कार्य करता है।

वैसै तो मौर्य वंश का इतिहास काफी लम्बा रहा है। इतिहास मे मौर्य वंश का समय **322** bZlk iwoZ ls 184 bZlk iwoZ rd dk gSA iqLrd esa ys[kd us e[; rkSj ij bl le; dks pquk gS o bl dky [k.M esa Hkkjr dk o.kZu iLrqr djrk gSA

जैसे पुस्तक के नाम से ही स्पष्ट है कि लेखक ने मौर्य वंश मे केवल प्रमुख रूप से अशोक के समय को चुना है। शायद इसके अपने कारण हो सकते है tSls –

1. भारतीय इतिहास मे केवल दो लोगो को ही महान्ता की संज्ञा दी गयी है। प्रथम अशोक महान व f}rh; vdcj egkuA nkuksa dks viuh ifjfLFkfr;ksa Fkh A rFkk viuh dkj.kksa ls os egku dgyk,A
2. मौर्य वंश ने व उसके शासको ने तो वैसे सम्पूर्ण भारत को प्रभkfor fd;ा परन्तु शायद अशोक us lclsa T;knk iHkkfor fd;kA
3. मोटे तौर पर अशोक के शिलालेख इतनी ज्यादा मात्रा मे प्रlr gkrs gS fd mudk v/;;u djuk ,d tfVy dk;Z gSA
4. ek;Z lkekT; dk iru D;k gvk o mlds dkj.kksa dk Hkh v/;;u vkd"k.k dk fo"k; gSA

ys[kd us iqLrd dh jpuk ekSD lokfnh nf"Vdks.k ls dh gSA og Hkkjrh; bfrgkl ds ekS;Z dky [k.M dk o.kZu Hkh ekSD lokfnh nf"Vdks.k ls gh djrh gSA अशोक को महान कहने के क्या कारण थे आखिर क्यो अशोक को महानता की संज्ञा भारतीय इतिहास मे दी जाती है पर भी चर्चा की गयी gSA

iqLrd esa dqy 10 v/;k;ksa esa foHkkftr gSA लेखक की निबन्धात्मक शैली काफी जटिल gks x;h gSA og vR;ar gh xq.ा अर्थ में मौर्य काल का विशलेषण करता है। pkfd de v/;k;ksa esa gh

उसने सम्पूर्ण भारत का वर्णन किया है तथा मौर्यो का विशलेषण किया है इससे सब कुछ लेखन मे feykoV gks tkrh gSA iksBd dks dkQh dBukbZ dk lkeuk djuk iM+rk gSA

tSlk uke ls gh Li"V gS fd लेखक का मुख्य केन्द्र अशोक है। अशोक ने अपने जीवन मे tks dN Hkh fd;k ,mldk ifjp; iLrd ikBdks dks djkrh gSA iLrd es -अशोक का आरम्भिक जीवन ,mldk jkT;kjksg.k, jkT; dky dh ?kVukvks rFkk lkekftd vkj vkfFkZd xfrfof/k, ek;kZd vkUrfjd प्रशासन और वैदेशिक संबध , /kEe uhfr , ckn ds ek;Z lekV, मौर्य वंश का पतन , mi lagkj, अर्थशkkL= dh frfFk व अशोक की उपाधिk;ks ds ckjs es foLrr rkj ij ppkZ dh x;h gSA

पुस्तक का प्रमुख आकर्षण केन्द्र अशोक की धम्म नीति व मौर्य साम्राज्य का पतन है। ikphu Hkkjrh; bfrgkl ds bfrgkldkjks ds e/; अशोक के धम्म को लेकर काफी बहस हुयी है व vuid 0;k[;k,s Hkh nh गयी है। लेखक उन व्याख्याओं की चर्चा नही करता बल्कि अपने द्वारा जो शोध fd;k x;k gS mldks iLrr djrk gS o mldh ,d u;h 0;k[;k nrk gSA ys[kd dk ekuuk gS fd अशोक dk /kEe mldh futh dYiuk Fkh tks jktufrd व प्रशासनिक उददेश;ks dks /;ku es j[k dj cuk;h x;h Fkh A

ekSD lokndh nf"Vdk.k dh >yd lHkh txg fn[kk;h nrh gSA ekSD lokndh fl)kUrks dks प्राचीन भारतीय इतिहास मे थोपा गया है व उसी के चश्मे ls ikphu Hkkjrh; bfrgkl o ikphu Hkjrh; जन जीवन को दर्शाने का प्रयास किया गया है जो पुस्तक को नीरस व रंग विहीन बना देता है।

पुस्तक में कुछ चित्रों को भी प्रदर्शित किया गया है। इन चित्रों में शिलालेखो को दर्शाया x;k gSA ijUrq bruk cMk v/;;u iksBdks ds lEeq[k iLrr fd;k x;k tks doy ys[kd u gh fd;k gSA vr: blesa cgqr de txgks ij vU; bfrgkldkjks u tks ikphu Hkkjrh; bfrgkl ds ek;kZs ij अपने शोध लिखे है को कम स्थान देता है।

blls ,d lef;k ink gksrh gS og ;g gS fd ek;kZs ds ckjs es doy ys[kd dk gh fopkj irk pyrk gS vU;ks dk ugh ;k mlls Lrj rd ugh ftruk fd ikBdks dks pkfg,A

मुख्य तैर पर पाठक चाहता है कि एक ही पुस्तक में व कम समय में उसे अधिकांश मात्रा es tkudkjh fey tk, ijUrq ,slk bl iLrd es ugh gS vkj yxrk gS लेखक ने इस उददेश्य से इस पुस्तक की रचना भी नही की है। वह केवल अपने विचार व्यक्त करता है जो उसने शोध किया है। bl काल पर कुछ अन्यो ने भी अपने विचार व शोध कार्य किया gS ys[kd mudks Hkh viuh iLrd es LFkku देता है। परन्तु अधिकाश्र रूप मे वह अपने विचार ही iLrqr djrk gSA

बौद्ध धर्म की विभिन्न नीतियों कार्यो सिद्धान्तो ने किस प्रकार शासन व समाज को प्रभावित किया इसका उल्लेख लेखक विशेष तौर पर करता है। अशोक ने किस प्रकार धम्म की नितियॉ viukdj lekT; dks iHkkfor fd;k o bfrgkl es viuk uke ntZ fd;k dk foLrr rkj ij ppkZ djrk gSA

rRdkyhu xfrfof/k;ks ij ,d utj -

मौर्य वंश में दो व्यक्तियों का प्रमुख नाम आता है। पहला है pUnxqIr ek;Z o nwljk gS अशोक महान का। अशोक pUnxqIr ek;Z dk ikSrk FkkA मौर्य वंश मे पहले pUnxqIr ek;Z , fQj बिन्दुसार व उसके बाद अशोक का नाम आता है।

बिन्दुसार की 16 रानियाँ थी व 101 पुत्र थे। अशोक किस रानी का पुत्र था यह सन्देह हास्पद है। सबसे बड़ा सुशीम व सबसे छोटा तिष्य था। अशोकवादन माला अशोक की माँ को सुभद्रांगी तथा महाबोधिवंश e sa mls /kEek dgk x;k gSA

fcUnqlkj dh eR;q 273 bZ- iw- मे हो गयी थी परन्तु उसके पुत्र अशोक 269 ई- iw- es jkt xn~nh ij cSBk A lkekU;r;k firk dh eR;q ds ckn gh iq= dk jkT;kjksg.k rqjUr gks tkrk gSA ijUrq nksuks frfFk;ks ds e/; pkj o"kZ dk vUrj gSA vuqJqfr crkrh gS fd अशोक ने अपने 99 भाईयों को ekj dj ?kkV mrkj fn;k FkkA fLeFk इस अनुश्रुति का विश्वास नहीं करते है उनdk er gS fd mlus अपने बड़े भायी सुशीम से gh pkj o"kZ rd la?k"kZ fd;k rFkk fot;h gksdj lekV cukA

सम्राट के तौर पर उसने दो विजयें की पहली कशमीर की 262 bZ- iw- es o nwljh 261 bZ- iw- में कलिंग की । तेरहवे शिलालेख के अनुसार उसने dfyx fot; dk o.kZu fd;k gSA vkj blh jDrikr ds ckn ls mlus ckS) /keZ /kkj.k dj fy;kA उपगुप्त नामक भिक्षु ने अशोक को बौद्ध धर्म मे fnf{kr fd;k A अशोक की मृत्यु बहुत की कठिन परिस्थितियों मे हुयी । बौद्ध धर्म में अत्यधिक दान व iwtk dk cgkuk ‘शायद उसके पुत्रो को पसन्द नही आया और उसे कारागार मे वृद्धा अवस्था मे बन्दि cukdj j[kk x;k A ‘शायद उसी मे उसकी मृत्यु हो x;hA

अशोक के बाद कुणाल, दशरथ, lEizfr, शलिशुक , देवशर्मा, शतधनुष, वृहदथ क्रमशः lekV gq,A vfUre lekV वृहदथ की हत्या कर उसके ही सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने शुंग वंश की नीव MkyhA

अभिनव दिव्यांशु

इतिहास एवं सभ्यता विभाग

मानविकी एवम सामाजिक विज्ञान संकाय

गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय,

ग्रेटर नोएडा, यू. पी